



तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन



मूलसूत्र

हितोपदेशी

वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ॥

सर्वज्ञ

प्रयोजन - भावना

अध्याय १: सूत्र १३ - मतिज्ञान के दूसरे नाम



मतिज्ञान के दूसरे नाम

मतिःस्मृतिःसंज्ञाचिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् ॥ १३ ॥

अर्थ - [मति] मति, [स्मृतिः] स्मृति, [संज्ञा] संज्ञा, [चिन्ता] चिन्ता, [अभिनिबोध] अभिनिबोध, [इति] इत्यादि, [अनर्थांतरम्] अन्य पदार्थ नहीं हैं, अर्थात् वे मतिज्ञान के नामान्तर हैं।

अध्याय १: सूत्र १४ - मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त



मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त

तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥

अर्थ - [इन्द्रियानिन्द्रिय] इन्द्रियाँ और मन [तत्] उस मतिज्ञान के
[निमित्तम्] निमित्त हैं ।

अध्याय १: सूत्र १४ - मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त



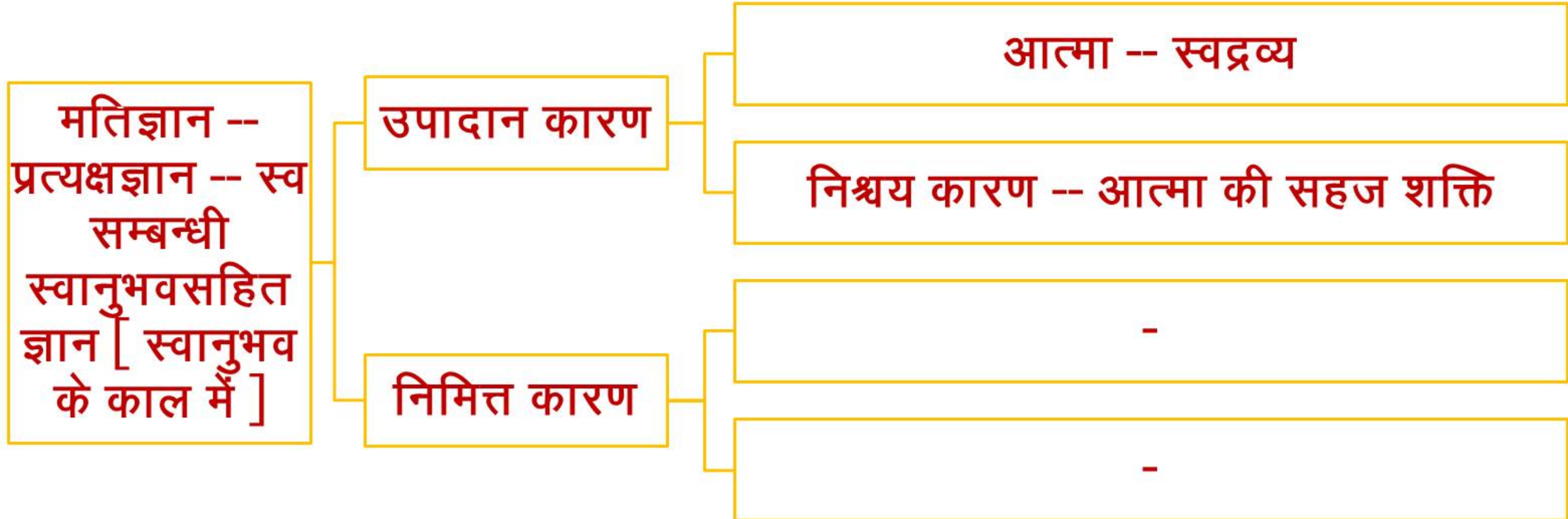
तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥ - इन्द्रिय ओर मन का स्वरूप

इन्द्रिय – आत्मा, (इन्द्र = आत्मा) परम ऐश्वर्यरूप प्रवर्तमान है,
इस प्रकार अनुमान करानेवाला शरीर का चिह्न ।
नो इन्द्रिय – मन; जो सूक्ष्म पुद्गलस्कन्ध मनोवर्गणा के नाम से
पहिचाने जाते हैं, उनसे बने हुए शरीर का आन्तरिक अङ्ग, जो कि
अष्ट दल कमल के आकार हृदयस्थान में हैं ।

अध्याय १: सूत्र १४ - मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त



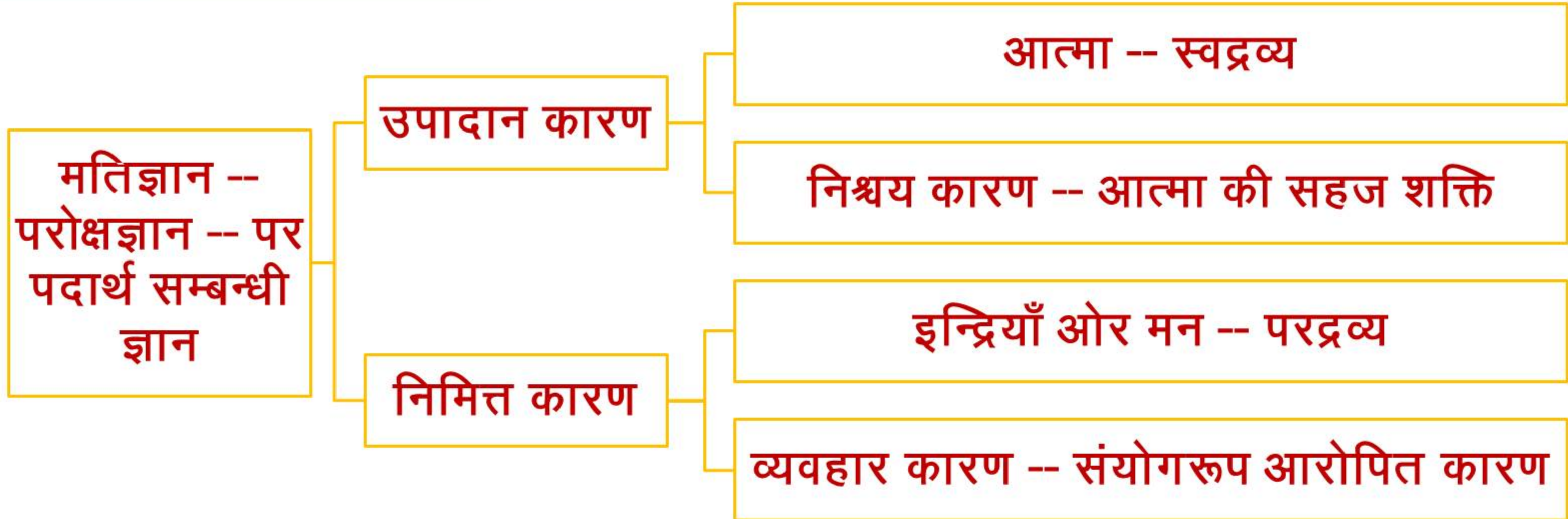
तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥ - उपादान - निमित्त की व्यवस्था



अध्याय १: सूत्र १४ - मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त



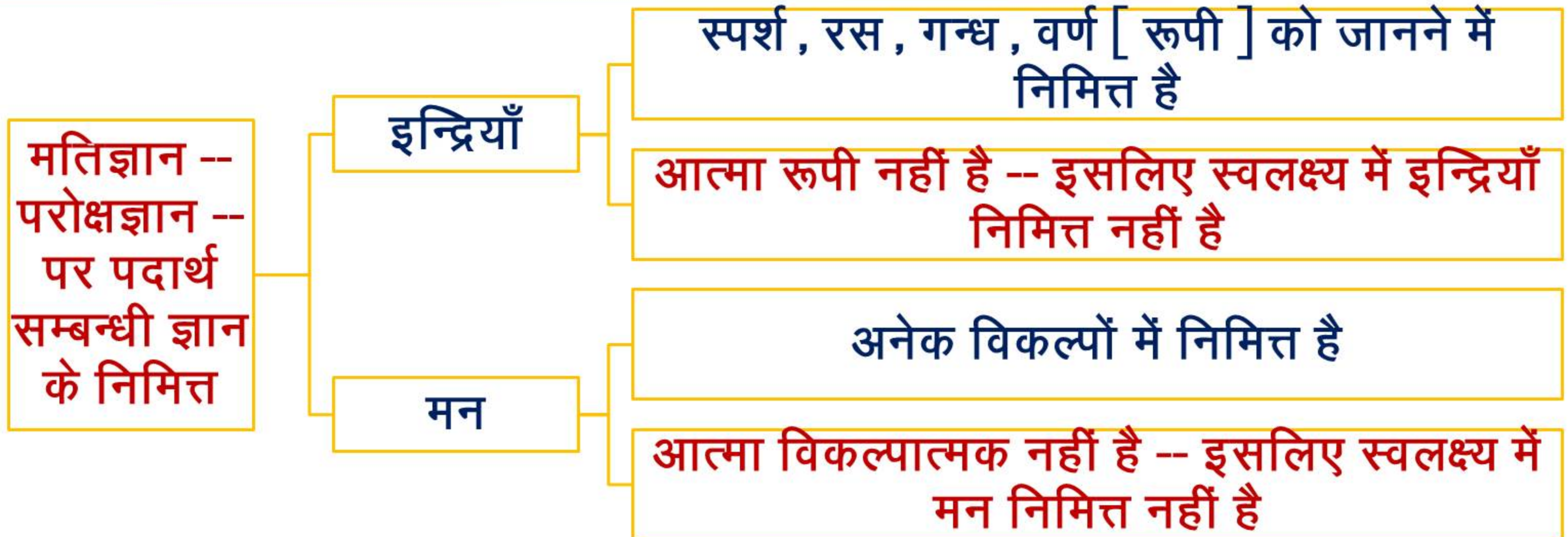
तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥ - उपादान - निमित्त की व्यवस्था



अध्याय १: सूत्र १४ - मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त



तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥ १४ ॥ - इन्द्रिय ओर मन का निमित्तपना





तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १४



आगे की विषय-वस्तु.....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन , उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१



तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १५

अध्याय १: सूत्र १५ - मतिज्ञान के क्रम के भेद



मतिज्ञान के क्रम के भेद

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥

अर्थ - [अवग्रह ईहा अवाय धारणाः] अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा, यह चार भेद हैं।

अध्याय १: सूत्र १५ - मतिज्ञान के क्रम के भेद



अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - अवग्रह का स्वरूप

अवग्रह (Perception) – चेतना में जो थोड़ा विशेषाकार भासित होने लगता है, उस ज्ञान को 'अवग्रह' कहते हैं। विषय और विषयी (विषय करनेवाले) के योग्य स्थान में आ जाने के बाद होनेवाला आद्यग्रहण अवग्रह है। स्व और पर दोनों का (जिस समय जो विषय हो उसका) पहिले अवग्रह होता है।

अध्याय १: सूत्र १५ - मतिज्ञान के क्रम के भेद



अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - ईहा का स्वरूप

ईहा (Conception) - अवग्रह के द्वारा जाने गए पदार्थ को विशेषरूप से जानने की चेष्टा (आकाँक्षा) को ईहा कहते हैं ।

अध्याय १: सूत्र १५ - मतिज्ञान के क्रम के भेद



अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - अवाय का स्वरूप

अवाय (Judgement) - विशेष चिह्न देखने से उसका निश्चय हो जाए, सो अवाय है।

अध्याय १: सूत्र १५ - मतिज्ञान के क्रम के भेद



अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - धारणा का स्वरूप

धारणा (Retention) – अवाय से निर्णीत पदार्थ को कालान्तर में न भूलना, सो धारणा है ।



जिनवाणी स्तुति